**International Journal in Management and Social Science**
Volume 11 Issue 3, March 2023 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

# स्कन्द कार्तिकेय की प्रतिमाओं का शिल्प शास्त्रीय अध्ययन

**डॉ0 प्रदीप सिंह**

विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, टी0डी0 पी0जी0 कॉलेज, जौनपुर

हिन्दू देव परिवार में स्कन्द कार्तिकेय का महत्वपूर्ण स्थान है। परवर्ती ग्रन्थों में शिव और पार्वती के पुत्र कार्तिकेय को एक महान सेनानायक तथा युद्ध के देवता के रूप में मान्यता प्राप्त है। इस देवता को कुमार, स्कन्द, कार्तिकेय, महेशान आदि नामों से अभिहित किया गया है। महाभारत में इन्हें अग्नि का पुत्र, एक युद्ध के देवता के रूप में तथा देवताओं के सेनापति के रूप में वर्णित किया गया है। महाभारत के अनुसार उन्हें छः ऋषियों की पत्नियों का पुत्र होने का सौभाग्य मिला था। अपनी छः माताओं का स्तनपान करने के लिए उनके छः मुखों की कल्पना की गयी है। रामायण में इन्हें अग्नि तथा गंगा का पुत्र स्वीकार किया गया है। रामायण तथा महाभारत में इनके स्कन्द कुमार, कार्तिकय, गुहा आदि नामों का उल्लेख होने के साथ ही साथ इनके नामोल्लेख के अनेक कारणों पर भी विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है।[1] उन्हें हाथ में शक्ति लिये एक योद्धा के रूप में वर्णित किया गया है।[2]

पुराणों में कार्तिकेय की शक्ति विषयक अनेक कथाएं प्राप्त होती हैं। शिवपुराण एवं मत्स्यपुराण में शिव और पार्वती के पुत्र कार्तिकेय के द्वारा तारकासुर के वध की कथा का विस्तृत विवरण दिया गया है। कालिदास ने कार्तिकेय के जन्म और उनके द्वारा तारकासुर के संघर्ष के विस्तृत कथानक को अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ कुमार संभव का विषय बनाया है।

उत्तर भारत के युद्ध प्रिय शासकों ने इस सामरिक देवता को अपनी मुद्राओं पर बड़े ही गौरव के साथ अंकित किया है। यौधेय शासकों ने इस देवता को अपनी मुद्राओं पर प्रदर्शित किया है। दूसरे प्रकार के सिक्के (द्रम) पर कार्तिकेय को एकमुखी प्रदर्शित किया गया है उनके सिक्कों पर कार्तिकेय के वाहन मयूर का भी अंकन है। कुषाण शासक हुविष्क ने अपनी मुद्राओं पर स्कन्द को व्यापक रूप से प्रदर्शित किया है।[3] मुद्रालेखों में उसके महासेन, स्कन्द, विशाख, कुमार आदि नाम दिये गये हैं। गुप्तवंशीय शासकों ने भी अपनी मुद्राओं पर कार्तिकेय का अंकन सगर्व किया है। कुमार गुप्त प्रथम की मुद्राओं पर कार्तिकेय को बॉए हाथ में शक्ति धारण किये हुए मयूर पर सवार प्रदर्शित किया गया है।[4] दक्षिण भारत में भी स्कन्द पूजा की स्वतन्त्र परम्परा का उल्लेख प्रचीन साहित्य से प्राप्त होता है। दक्षिण भारत में मुरुगन, शेयोन, वेलन आदि नामों से अभिहित एक युवा रक्तवर्णी शक्ति एवं पराक्रम से युक्त देवता की उपासना की जाती थी, जिसका तादात्म्य उत्तर भारत के स्कन्द–कार्तिकेय देवता से स्थापित किया गया है। दक्षिण भारत के इक्ष्वाकु, कदम्ब, चालुक्य आदि शासक कार्तिकेय के भक्त थे। इस प्रकार प्राचीन भारत में युद्धप्रिय देवता स्कन्द कार्तिकेय एक राष्ट्रीय देवता के रूप में सम्पूर्ण भारत में लोकप्रिय रहे हैं। प्रतिमालक्षण ग्रन्थों में शिल्प शास्त्रीय दृष्टि से स्कन्द कार्तिकेय की प्रतिमा को विभिन्न रूपों में प्रदर्शित करने का विधान है। वाराहमिहिर की वृहत्संहिता में स्कन्द कार्तिकेय के स्वरूप का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रन्थ में कार्तिकेय को

मयूरासीन, हाथ में शक्ति धारण किये हुए एक युवक कुमार के रूप में वर्णित किया गया है।[5] विष्णुधर्मोत्तर पुराण में कार्तिकेय के प्रतिमा लक्षण का विस्तृत विवेचन है। इस ग्रन्थ के अनुसार उनके छः मुख तथा चार हाथ हैं, उनका वस्त्र लाल तथा मयूर पर आसीन होते हैं। उनके दाहिने हाथ में कुक्कुट और घण्टा तथा बॉएं हाथों में विजयध्वज (पताका) और शक्ति होता है। इस ग्रन्थ में कार्तिकेय के तीन रूपों स्कन्द, कुमार और गुहा को भी कार्तिकेय के सदृश ही बताया गया है जो शिल्प विद्या का एक उत्कृष्ट नमूना है। यहां उन्हें षडानन और मयूरासीन रूप में वर्णित नहीं किया गया है।[6] मत्स्यपुराण[7] में कार्तिकेय प्रतिमा लक्षण के अर्न्तगत उन्हें सूर्य की प्रभा के सदृश देदीप्यमान, कमल सदृश वर्ण वाले एक सुकोमल कुमार के रूप में, दण्डधारी, मयूरासीन बतलाया गया है। उन्हें द्विभुजी और द्वादशभुजी रूप में भी दिखाया जाना चाहिए। द्वादशभुजी प्रतिमा की स्थापना नगर में, चतुर्भुज की खर्वट में और द्विभुज प्रतिमा की स्थापना ग्रामों में होनी चाहिए। पुराणों, आगमों तथा शिल्प ग्रन्थों के विवरण के आधार पर कार्तिकेय की प्रतिमा का जो स्वरूप निश्चित होता है, उसके अनुसार देवता सूर्य और कमल जैसा पीतवर्ण वाला, एक मुखी अथवा षडमुखी, तरूण युवक के रूप में प्रदर्शित होता है। द्विभुज रूप में उसके बॉएं हाथ में शक्ति, पाश तथा दाहिने हाथ में कुक्कुट तथा वाहन मयूर होता है। चतर्भुजी रूप में उसके बॉएं हाथों में शक्ति, पाश तथा दायें हाथों में से एक हाथ में तलवार और दूसरा हाथ वरद या अभय मुद्रा में होता है। उनका वाहन मयूर होता है। द्वादश भुजी रूप में उनके दाएँ हाथों में शक्ति, पाश, खड्ग, बाण, त्रिशूल, वरद या अभय मुद्रा में होती है। बायें हाथों में वे धनुष, पताका, मुष्टि, तर्जनी, ढाल और कुक्कुट धारण किये होते हैं। प्राचीन भारतीय कला में कार्तिकेय का अंकन सामान्यतया खड़े अथवा बैठे दोनों ही रूपों में मिलता है और वे हाथ में शक्ति धारण किये होते हैं, उनके वाहन के रूप में मयूर का अंकन होता है। कार्तिकय को प्रारम्भिक प्रतिमाओं का निर्माण कुषाणकालीन मथुरा तथा गान्धार कला में हुआ है। इन प्रतिमाओं में कार्तिकेय को द्विभुजी रूप में दिखाया गया है, उनका दाहिना हाथ अभय मुद्रा में और बॉएं में शक्ति लिए हुए है, देवता के वाहन के रूप में कभी मयूर और कभी कुक्कुट प्रदर्शित किया गया है। गुप्तकाल तक आते–आते कार्तिकेय को मयूरासीन प्रदर्शित किया जाने लगा। इस काल की विविध अलंकरणों से युक्त कार्तिकेय की सुन्दर प्रतिमा भारतकला भवन, वाराणसी में संग्रहीत है।[8] इसमें मयूरासीन देवता के हाथों में मातुलुंग और शक्ति का प्रदर्शन है। इस प्रतिमा में प्रतिमाशास्त्रीय परम्परा के निर्वाह के साथ ही साथ उत्कृष्ट शिल्प का भी प्रदर्शन हुआ है। मयूर के पंखों को फैलाकर देवता के प्रभावलि के रूप में अति कलात्मक ढंग से संयोजित किया गया है। गुप्तकाल की राज्य संग्रहालय मथुरा में सुरक्षित एक प्रतिमा की विशेषता यह है कि कार्तिकेय के दाहिने पार्श्व में चतुर्भुज ब्रह्मा और बाएं पार्श्व में शिव को प्रदर्शित किया गया है। शिव हाथ में जलपात्र लिये हुए हैं और ब्रह्मा कार्तिकेय का अभिषेक कर रहें हैं।[9] गुप्तकाल के अन्त तक आते–आते कार्तिकेय शिव के परिवार देव में प्रतिष्ठित हो चुके थे। गुप्तोत्तर काल में तो शैव मन्दिरों में शिव और पार्वती के साथ कार्तिकेय का अंकन विशेष रूप से किया गया है। भुवनेश्वर के शैव मन्दिर के साथ गणपति और कार्तिकेय को पार्श्व देव के रूप में उत्कीर्ण किया गया है।[10] पार्वती की कुछ प्रतिमाओं में उनके दोनों तरफ कार्तिकेय तथा गणपति को प्रदर्शित किया गया है। पार्वती की

चार भुजाओं में से ऊपर की दो भुजाओं में पूर्ण विकसित नाल वाला कमल है, और उन दोनों कमलों पर गणेश तथा कार्तिकेय की छोटी–छोटी आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं।[11] सातवीं शताब्दी ई० की पंजाब से प्राप्त और राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में सुरक्षित कार्तिकेय प्रतिमा में हार, कर्णबाली आदि आभूषणों से युक्त देवता को अपने दाहिने हाथ में शक्ति लिये हुए मयूरासीन प्रदर्शित किया गया है।[12] इस प्रकार शिल्प कला के उत्कृष्ट उदाहरणस्वरूप स्कन्द कार्तिकेय को कलाओं में एक राष्ट्रीय देवता के रूप में सम्पूर्ण भारत में प्रदर्शित किया जाने लगा। भारत के बाहर विदेशों में भी युद्ध देवता के रूप में सम्मानित स्थान देकर कार्तिकेय का मूर्तन कला में किया गया है। नेपाल के पाटन स्थित कुम्भेश्वर मन्दिर में इस देवता को चतुर्भुजी रूप में अपने ऊपर के दोनों हाथों में अक्षमाला और शक्ति लिये हुए मयूरासीन प्रदर्शित किया गया है। देवता का निचला दोनों हाथ अभय और वरद मुद्रा में है। इसी प्रकार सिंहल और दक्षिणी पूर्वी एशिया के विभिन्न देशों से इस देवता की अनेकों सुन्दर प्रतिमाएं प्राप्त होती हैं। इन देशों में उन्हें एक शत्रुनाशक देवता के रूप में मान्यता प्राप्त थी और सम्मानित स्थान मिला था।

सन्दर्भ :

1. महाभा० वन प०, 232, 3–9, 225, 16–18, शान्ति प० 1223, 2, 326, 9–11
2. स्कन्द, शक्ति समादाय तस्थौ मेरूरिवाचलः

(महाभा०, आदि प०, 226, 36)

3. दि डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दूआइकोनोग्राफी, फलक 10, चित्र 9.
4. कैटलॉग ऑफ दि क्वायंस ऑफ दि गुप्ता डायनस्टीज एण्ड ऑफ शशांक इन दि ब्रिट्रिश म्युजियम, फलक 15, 5–11.
5. स्कन्दः कुमाररूपः शक्ति वहिकेतुश्च।

(वृहत्सं० 57, 41)

6. विष्णु धर्मोत्तर पुराण 3, 71, 3–6.
7. कार्तिकेय प्रवक्ष्यामि तरुणादित्यसप्रभम्।
   कमलोदर वर्णाभं कुमारं सुकुमारकम्।।
   दण्डकैश्वीर कैयुक्तं मयूरवाहनम्।
   स्थापत्ये तस्वेष्ट नगरे भुजान्द्वादश कारयेत्।।
   चतुर्भुजः खर्वटे स्याद्वाने ग्रामें द्विवाहुकं।।

(मत्स्य पुराण, 260, 45–47)

8. ए०के० कुमारस्वामी, हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एण्ड इण्डोनेशियन आर्ट, पृ० 86, फलक 46. चित्र 175.
9. अग्रवाल, वासुदेवशरण, भारतीय कला, पृ० 270, 9.
10. दि डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दूआइकोनोग्राफी, पृ० 364.
11. अग्रवाल, वासुदेवशरण, मथुरा कला, पृ० 74–76.
12. यू० ठाकुर, एम०, आक्सपेक्ट्स ऑफ एन्सिएंट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड कल्चर, पृ०248–49, फलक 5.